Academe *Journal of Education & Psychology*
Volume-14, Issue-2, Year-2024 (July-December)
PP: 86-93 *ISSN: 2249-040X*

पौराणिक आख्यानों का समकालीन रूपांतरण और निराला एवं प्रसाद की लम्बी कविताओं का विशेष अनुशीलन

कुमारी स्मिता

पूर्व शोधार्थी

विश्विद्यालय हिंदी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा

सार

यह शोधपत्र पौराणिक आख्यानों के समकालीन रूपांतरण को आधुनिक हिंदी काव्य-आधुनिकता की एक केंद्रीय रचनात्मक प्रक्रिया के रूप में विवेचित करता है और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की लम्बी कविता "राम की शक्ति-पूजा" तथा जयशंकर प्रसाद के महाकाव्यात्मक आख्यान "कामायनी" का विशेष अनुशीलन प्रस्तुत करता है। अध्ययन का प्रतिपाद्य यह है कि आधुनिक काल में मिथक/पुराकथा का प्रयोग "कथानक-उधार" नहीं रहता; वह नई समय-चेतना, नैतिक संकट, आत्मसंघर्ष, सभ्यता-आलोचना और सांस्कृतिक पहचान के पुनर्निर्माण का माध्यम बनता है। निराला के यहाँ रूपांतरण संकट-क्षण, नाटकीयता और "शक्ति" की पुनर्परिभाषा के जरिए घटित होता है; प्रसाद के यहाँ वही पुराकथात्मक आधार प्रलय–मनु–नवसृष्टि के सहारे मानव-मन की वृत्तियों और सभ्यता-विकास के प्रतीकात्मक–दार्शनिक विधान में रूपांतरित होता है। पेपर अंतर्पाठीयता, आख्यान-समय, प्रतीक-व्यवस्था तथा रूपांतरण-सिद्धांत के आधार पर दोनों रचनाओं की संरचना, भाषा और विचार-तंत्र का तुलनात्मक विश्लेषण करते हुए एक डेटा-सहायक पाठ-विश्लेषण ढाँचा भी प्रस्तावित करता है।

कूट शब्द: पौराणिक आख्यान, समकालीन रूपांतरण, मिथक-आधुनिकता, अंतर्पाठीयता, लम्बी कविता, महाकाव्यात्मक आख्यान, छायावाद, काव्य-आख्यानशास्त्र, प्रतीक-व्यवस्था, सांस्कृतिक स्मृति, सभ्यता-आलोचना

1. प्रस्तावना

पौराणिक आख्यान भारतीय सांस्कृतिक स्मृति का वह दीर्घकालिक भंडार है जिसमें देव-चरित, सृष्टि–प्रलय, धर्म–अधर्म, शक्ति–साधना, आदर्श–विचलन और लोक–नीति जैसी अनेक परतें एक साथ सक्रिय रहती हैं। आधुनिक युग में जब साहित्य का प्रमुख प्रश्न "परंपरा का पुनर्पाठ" और "समकालीन अर्थ-निर्माण" बनता है, तब मिथक/पुराकथा का रूपांतरण केवल कथानक-स्थानांतरण न रहकर एक जटिल सांस्कृतिक प्रक्रिया बन जाता है। रूपांतरण-सिद्धांत बताता है कि कोई भी रूपांतरित रचना स्रोत-पाठ की "प्रतिलिपि" बनने के बजाय नए समय, नए पाठक और नए वैचारिक दबावों के अनुसार अपने अर्थ-तंत्र का पुनर्गठन करती है; इसीलिए रूपांतरण की कसौटी 'वफादारी' नहीं, बल्कि "पुनरर्थीकरण" है [1]।

इसी वैचारिक जमीन पर "पौराणिक आख्यानों का समकालीन रूपांतरण" हिंदी की लम्बी कविताओं में विशेष रूप से फलित होता है, क्योंकि लम्बी कविता कथात्मक विस्तार, भाव-गति, प्रतीक-घनत्व और वैचारिक खंड-रचना, इन सबको एक साथ साधती है। आख्यानशास्त्र के अनुसार आख्यान केवल "कथा" नहीं, बल्कि कथन-प्रक्रिया, कथावाचक-दृष्टि, समय-संरचना और भाषा-रणनीति का संयुक्त तंत्र है; और लम्बी कविता में यही तंत्र कविता की लय और प्रतीकात्मकता के साथ मिलकर अर्थ की बहुस्तरीयता निर्मित करता है [2]।

इस संदर्भ में निराला और प्रसाद की रचनाएँ इसलिए निर्णायक हैं कि वे आधुनिक हिंदी काव्य में मिथक को दो अलग दिशाओं में विकसित करती हैं। निराला की "राम की शक्ति-पूजा" रामकथा के भीतर शक्ति-साधना के प्रसंग को लेकर उसे संकट-क्षण, नैतिक निर्णय और आत्मसंघर्ष की आधुनिक भाषा में रूपांतरित करती है [3]। प्रसाद की "कामायनी" प्रलय–मनु आख्यान को आधार बनाकर मनोवृत्तियों, सभ्यता-विकास और मूल्य-संघर्ष का प्रतीकात्मक महाकाव्य रचती है [4]। इस प्रकार दोनों के यहाँ "समकालीन रूपांतरण" एक ही सांस्कृतिक भंडार से निकलकर अलग-अलग सौंदर्यशास्त्रीय और वैचारिक परिणतियाँ निर्मित करता है।

यह शोधपत्र तीन उद्देश्यों के साथ आगे बढ़ता है। प्रथम, समकालीन रूपांतरण के सिद्धांतों के आलोक में यह स्पष्ट करना कि पौराणिक आख्यान आधुनिक साहित्य में किन रूपों में पुनर्गठित होते हैं [1], [2]। द्वितीय, निराला और प्रसाद की इन प्रतिनिधि लम्बी काव्य-रचनाओं में मिथक-रूपांतरण की तकनीक, भाषा और प्रतीक-व्यवस्था का निकट पाठ प्रस्तुत करना [3], [4]। तृतीय, दोनों रचनाओं के तुलनात्मक निष्कर्षों के आधार पर यह बताना कि हिंदी काव्य-आधुनिकता में मिथक किस प्रकार "इतिहास-बोध" और "आत्म-बोध" को एक साथ जोड़ता है [5], [6]।

2. सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य: रूपांतरण, मिथक और अंतर्पाठ

रूपांतरण-सिद्धांत का आधार यह है कि स्रोत-पाठ और लक्ष्य-पाठ का संबंध "एक-से-एक" नहीं होता; वह चयन, संक्षेप, विस्तार, विस्थापन और पुनर्संयोजन की रचनात्मक प्रक्रिया से बनता है [1]। इस प्रक्रिया में तीन स्तर विशेष महत्त्व रखते हैं। पहला, कथा-स्तर (घटनाएँ, पात्र, संघर्ष); दूसरा, माध्यम/रूप-स्तर (कविता का कथन-स्वर, लय, खंड-रचना); तीसरा, अर्थ-राजनीति-स्तर (समय-संदर्भ, नैतिकता, सत्ता-संबंध, सांस्कृतिक पहचान)। निराला और प्रसाद, दोनों के यहाँ यही तीनों स्तर सक्रिय हैं, पर उनका "वजन" अलग है: निराला का जोर कथा-तनाव और नैतिक निर्णय पर अधिक है; प्रसाद का जोर प्रतीकात्मक–दार्शनिक पुनर्संरचना पर अधिक है [3], [4]।

मिथक को यदि केवल "प्राचीन कथा" माना जाए तो उसका सामाजिक–सांस्कृतिक कार्य छूट जाता है। मिथक आधुनिक समाज में भी सांस्कृतिक संकेतों का तंत्र बनकर काम करता है, वह किसी कथा/वस्तु को दूसरे स्तर पर अर्थ देता है और उसे सामूहिक वैधता

व भावात्मक शक्ति प्रदान करता है [7]। इस अर्थ में मिथक-रूपांतरण, आधुनिक कविता में "संकेतों की राजनीति" का भी कार्य करता है।

भारतीय आख्यान-परंपरा "एक-पाठ" की नहीं, "बहु-पाठ" की परंपरा है। रामकथा के अनेक पाठ, भाषाओं, क्षेत्रों और संप्रदायों में, यह दिखाते हैं कि आख्यान स्वयं बहुवचनात्मक होते हैं; अतः आधुनिक काव्य का मिथक-प्रयोग किसी एक 'मूल' के अनुसरण से नहीं, बल्कि बहुस्तरीय स्मृति से संवाद करके बनता है [8]। इसी बिंदु पर "राम की शक्ति-पूजा" में कृतिवास-परंपरा की छाया और "कामायनी" में वैदिक–पुराकथात्मक मनु–प्रलय स्मृति, दोनों को समकालीन अर्थ-रचना के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है [3], [9]।

3. पौराणिक आख्यानों का समकालीन रूपांतरण: अवधारणात्मक रूपरेखा

पौराणिक साहित्य का स्वभाव स्वयं "पुनर्संयोजन" का रहा है, वह अलग-अलग समयों में सामग्री जोड़ता, बदलता और पुनर्व्याख्यायित करता रहा है; इसलिए पुराणों के अध्ययन में यह स्थापित दृष्टि मिलती है कि पुराण-परंपरा एक स्थिर पाठ-संग्रह नहीं, बल्कि "गतिशील परतों" का निर्माण है [10]। इस गतिशीलता को आधुनिक कविता आगे बढ़ाती है, पर अब लक्ष्य धार्मिक–अनुष्ठानिक एकरूपता नहीं, बल्कि आधुनिक अनुभव की जटिलता होती है।

समकालीन रूपांतरण की प्रमुख प्रविधियाँ, जो निराला और प्रसाद की रचनाओं में भिन्न अनुपात में दिखती हैं, चार रूपों में समझी जा सकती हैं।

1. समय-रूपांतरण: पौराणिक समय आदर्श-केंद्रित या चक्रीय हो सकता है, पर आधुनिक कविता उसे संकट, विकल्प, निर्णय और मनोवैज्ञानिक टूटन–संयोजन के समय में बदल देती है [2], [7]।
2. नैतिक रूपांतरण: पुराकथा के 'धर्म' को आधुनिक कविता 'नैतिक दायित्व', 'आत्म-संघर्ष' और 'मानवीय विवेक' के रूप में पुनरर्थित करती है [1], [6]।
3. प्रतीक रूपांतरण: देवी/शक्ति/श्रद्धा/इड़ा जैसे तत्व अब केवल धार्मिक संकेत नहीं रहते; वे ऊर्जा, करुणा, बौद्धिकता, सत्ता, सभ्यता और प्रतिरोध के प्रतीक बन जाते हैं [3], [4]।
4. भाषिक–रूपात्मक रूपांतरण: लम्बी कविता मिथक को नई लय, नई खंड-रचना और नए कथन-स्वर में ढालकर पाठकीय अनुभव को बदल देती है [2], [5]।

इसी सैद्धांतिक फ्रेम में अब निराला और प्रसाद के विशेष अनुशीलन की ओर बढ़ना संगत है।

4. निराला की लम्बी कविता में पौराणिक आख्यान का समकालीन रूपांतरण: "राम की शक्ति-पूजा"

"राम की शक्ति-पूजा" रामकथा के भीतर शक्ति-साधना के प्रसंग को केंद्र में रखती है। इस चयन का तात्पर्य यह नहीं कि निराला रामकथा को फिर से सुनाते हैं; तात्पर्य यह है कि वे एक ऐसे प्रसंग को चुनते हैं जहाँ "विजय" की शर्त बाहरी शौर्य से अधिक आंतरिक साधना, विवेक और ऊर्जा के साथ जुड़ जाती है। यही चयन समकालीन रूपांतरण का पहला निर्णायक कदम बनता है [3]।

रामकथा की बहुवचन परंपरा को ध्यान में रखें तो यह भी महत्त्वपूर्ण है कि कविता जिस पौराणिक-स्मृति से संवाद करती है वह एकरेखीय नहीं है। भारतीय रामकथा के सैकड़ों पाठों/रूपों पर विमर्श यह दिखाता है कि रामकथा स्वयं एक "विविध कथा-परंपरा" है; इस विविधता के भीतर शक्ति-तत्त्व और देवी-परंपरा के कई सांस्कृतिक रूप मौजूद हैं [8]। निराला इसी बहुवचन स्मृति से सामग्री लेकर आधुनिक संघर्ष की नैतिकता रचते हैं, जिससे कविता "धार्मिक आख्यान" से निकलकर "समकालीन मनुष्य की परीक्षा" बन जाती है।

इस रचना की संरचना में नाटकीयता का कार्य अत्यंत केन्द्रीय है। युद्ध-स्थिति का दबाव, पराजय की आशंका, मानसिक थकान, और फिर साधना का अनुशासन, ये सब मिलकर एक ऐसा आख्यान-समय बनाते हैं जिसमें पाठक "निर्णय" को घटित होते देखता है, केवल सुनता नहीं [2], [3]। यही कारण है कि "राम" यहाँ केवल पौराणिक नायक नहीं रहते; वे आधुनिक व्यक्ति के आत्मसंघर्ष का प्रतिनिधि रूप बनते हैं [11]।

समकालीन रूपांतरण का सबसे महत्वपूर्ण मोड़ तब आता है जब 'शक्ति' का अर्थ केवल देवी-आराधना न रहकर आत्म-सामर्थ्य, नैतिक ऊर्जा और कर्म-निष्ठा के रूपक में बदलने लगता है। देवी-परंपरा के भीतर "शक्ति" ब्रह्मांडीय विजय-तत्त्व है; देवीमाहात्म्य जैसे ग्रंथों में शक्ति का स्वरूप धर्म-संरक्षण और अधर्म-विनाश के महा-तत्त्व के रूप में आता है [12]। निराला इस मूल सांस्कृतिक अर्थ को मिटाते नहीं; वे उसे आधुनिक अर्थ में विस्तारित करते हैं, जहाँ शक्ति संकट में खड़े मनुष्य की नैतिक–आत्मिक ऊर्जा भी है। यही "विस्तार" रूपांतरण की रचनात्मक उपलब्धि है [1], [7]।

लम्बी कविता में भाषा-रणनीति का कार्य केवल अलंकार या सौंदर्य नहीं; वह आख्यान-गति और तनाव-निर्माण की तकनीक है। निराला के काव्य में लय और उद्घोषात्मकता कई स्थलों पर युद्ध-समय की तीव्रता पैदा करती है और कई स्थलों पर साधना-समय का ठहराव। आख्यानशास्त्रीय भाषा में यह "समय का आवर्तन" है, जो पाठक को भाव-स्तर पर भी आगे–पीछे हिलाता है [2]।

यहाँ एक अंतर्पाठीय संकेत भी विचारणीय है। रामायण-परंपरा में युद्ध-थकान के बाद ऊर्जा-प्राप्ति/आश्वासन का एक प्रसिद्ध प्रसंग "आदित्यहृदय" से जुड़ा माना जाता है, जिसमें सूर्य-स्तुति के माध्यम से बल-संचय का प्रतीक मिलता है [13]। निराला की

कविता 'शक्ति' को युद्ध के संकट में ऊर्जा-संचय की तरह उपस्थित करती है, यानी वह व्यापक सांस्कृतिक स्मृति के "ऊर्जा-रूपक" को आधुनिक काव्य-रूप में पुनर्संयोजित करती है।

निराला का रूपांतरण केवल आध्यात्मिक नहीं, मनोवैज्ञानिक भी है। संकट-क्षण में व्यक्ति का आत्मविश्वास, भय, हताशा और पुनरुत्थान, ये आधुनिक अनुभव हैं जिन्हें पौराणिक कथा का ढाँचा 'कथात्मक वैधता' और 'भावात्मक तीव्रता' देता है [7]। इसीलिए "राम की शक्ति-पूजा" को एक ऐसी लम्बी कविता के रूप में पढ़ा जा सकता है जहाँ मिथक आधुनिक मनुष्य की निर्णय-नैतिकता का मंच बन जाता है।

5. प्रसाद की "कामायनी" में पौराणिक आख्यान का समकालीन रूपांतरण

"कामायनी" का आख्यान-आधार प्रलय और मनु से जुड़ी पुराकथात्मक स्मृति है। यह स्मृति वैदिक–ब्राह्मण साहित्य में भी मिलती है, जहाँ मनु–मत्स्य आख्यान के माध्यम से महाप्लावन के बाद जीवन-संरक्षण और पुनर्निर्माण की कथा आती है [9]। प्रसाद इसी आधार को लेकर उसे एक विशाल प्रतीकात्मक संरचना में बदलते हैं, जहाँ प्रलय केवल जल-आपदा नहीं, सभ्यता का संकट है; और मनु केवल एक पात्र नहीं, आत्म-चेतना का केंद्र है [4]।

यहाँ रूपांतरण का मूल तत्त्व "कथा" से अधिक "विचार" है। यानी पुराकथा के सहारे आधुनिक सभ्यता के प्रश्न, जड़ता बनाम गति, करुणा बनाम बौद्धिक अहं, इच्छा बनाम विवेक, इनकी दार्शनिक रूपरेखा तैयार होती है [4], [6]।

कामायनी की सर्वाधिक प्रसिद्ध विशेषता उसका प्रतीकात्मक विधान है। श्रद्धा और इड़ा जैसे पात्र केवल कथानक के घटक नहीं, बल्कि मूल्य-धारणाओं/मानसिक वृत्तियों के संकेत बनते हैं। समकालीन रूपांतरण यहाँ इस रूप में घटित होता है कि "श्रद्धा" और "इड़ा" जैसी संकल्पनाएँ पुराकथा के धार्मिक–सांस्कृतिक अर्थ को बनाए रखते हुए आधुनिक मनोवैज्ञानिक–सभ्यतागत अर्थों में पुनरर्थित हो जाती हैं [4]।

आधुनिक मिथक-विमर्श के परिप्रेक्ष्य में इसे "दूसरे स्तर के संकेत" की रचना कहा जा सकता है, जहाँ एक पुराकथात्मक पात्र सामाजिक–मनोवैज्ञानिक संकेत में बदल जाता है [7]। यही रूपांतरण "कामायनी" को एक साथ भारतीय सांस्कृतिक परंपरा से जोड़ता है और आधुनिक सभ्यता-चेतना के प्रश्नों के लिए उपयुक्त बनाता है।

प्रसाद के काव्य में दार्शनिक संश्लेष की प्रवृत्ति प्रबल है। कामायनी के कई आलोचनात्मक पाठ इसे शैव-दर्शन/आनंद-तत्त्व की व्याख्यात्मक दिशा से भी पढ़ते हैं, जहाँ यात्रा प्रलय से आनंद तक एक मूल्य-निर्माण यात्रा बन जाती है [14]। इस दृष्टि से कामायनी का रूपांतरण "धर्म" को कर्मकांड न रखकर "अर्थ-निर्माण" और "मूल्य-संतुलन" के रूप में पुनर्परिभाषित करता है।

यहाँ रूपांतरण का आधुनिक पक्ष यह है कि सभ्यता-विकास को 'सतत प्रगति' की सरल रेखा न मानकर, उसे मूल्य-संघर्षों और मानसिक द्वंद्वों की जटिल प्रक्रिया के रूप में

प्रस्तुत किया जाता है। यही जटिलता आधुनिकता का बोध है और यही पुराकथा को समकालीन बनाती है [6], [14]।

कामायनी में आख्यान-समय "क्षण-विशेष" पर केंद्रित नहीं; वह "दीर्घ विकास-यात्रा" है। प्रत्येक सर्ग एक मनोवृत्ति/मूल्य-संघर्ष को उभारता है और अंततः पाठक एक सभ्यतागत निष्कर्ष की ओर बढ़ता है। आख्यानशास्त्र के अनुसार यह संरचना "प्रकरणात्मक प्रगति" है, जहाँ खंड-रचना अर्थ-निर्माण का प्रमुख उपकरण बनती है [2]। इसी कारण कामायनी में पौराणिक आख्यान का रूपांतरण अधिक "प्रतीकात्मक–दार्शनिक" है, जबकि निराला में अधिक "नाटकीय–नैतिक"।

6. तुलनात्मक विश्लेषण: निराला बनाम प्रसाद

निराला के यहाँ रूपांतरण का केंद्र "निर्णय का क्षण" है। कविता एक ऐसी अवस्था रचती है जहाँ संकट चरम पर है और उसके भीतर से नैतिक ऊर्जा का जन्म होता है [3]। प्रसाद के यहाँ रूपांतरण का केंद्र "सभ्यता की यात्रा" है, जहाँ प्रलय के बाद मनुष्य/समाज अपने मूल्यों को पुनर्गठित करता है [4], [14]। इसलिए दोनों कृतियाँ समकालीन रूपांतरण के दो मॉडल प्रस्तुत करती हैं:

(क) संकट-आधारित रूपांतरण और

(ख) विकास-आधारित रूपांतरण।

देवी-परंपरा में शक्ति धर्म-संरक्षण की ब्रह्मांडीय शक्ति है [12]। निराला इसे आधुनिक आत्म-सामर्थ्य, अनुशासन और नैतिक दृढ़ता की पुनर्परिभाषा में बदलते हैं [3]। प्रसाद के यहाँ श्रद्धा मानवीय करुणा/विश्वास का संकेत बनकर सभ्यता को संतुलित करती है और इड़ा बौद्धिक–भौतिक प्रगति की दिशा का संकेत बनती है [4]। दोनों जगह एक साझा तत्त्व है: पुराकथा का ऊर्जा-तत्त्व आधुनिक मनुष्य की "आंतरिक राजनीति" में प्रवेश करता है, यानी अब वह बाहर की कथा नहीं, भीतर की संरचना है [7]।

रामकथा की विविधता पर विमर्श यह स्पष्ट करता है कि किसी एक 'मूल' पाठ को अंतिम मानना कठिन है [8]। निराला का रूपांतरण इसी बहुवचनता के भीतर से एक विशिष्ट शक्ति-प्रसंग चुनता है और उसे आधुनिक संघर्ष-नैतिकता की भाषा देता है [3]। प्रसाद का रूपांतरण वैदिक–पुराकथात्मक मनु–प्रलय स्मृति से संवाद करता है और उसे सभ्यता-विवेक की प्रतीक-व्यवस्था में ढाल देता है [9], [4]। इस तरह दोनों के यहाँ अंतर्पाठीयता "उद्धरण" नहीं, "चयन–पुनर्संयोजन" की रणनीति है [1], [2]।

7. निष्कर्ष

यह शोधपत्र इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि पौराणिक आख्यानों का समकालीन रूपांतरण आधुनिक हिंदी काव्य में परंपरा और आधुनिकता के बीच एक सक्रिय सेतु है, जो सांस्कृतिक स्मृति को आधुनिक अनुभव, मनोविज्ञान और नैतिकता के साथ पुनर्गठित

करता है [1], [10]। निराला की "राम की शक्ति-पूजा" में रूपांतरण "संकट-क्षण" की नाटकीयता और निर्णय-नैतिकता के जरिए घटित होता है, जहाँ शक्ति देवी-परंपरा के साथ-साथ आधुनिक आत्म-सामर्थ्य का रूपक बन जाती है [3], [12]। प्रसाद की "कामायनी" में रूपांतरण "सभ्यता-यात्रा" और प्रतीकात्मक–दार्शनिक खंड-रचना के जरिए घटित होता है, जहाँ प्रलय-आख्यान मानव-चेतना के विकास और मूल्य-संघर्ष का रूपक बन जाता है [4], [14]।

दोनों रचनाएँ दिखाती हैं कि मिथक आधुनिकता में निष्क्रिय नहीं होता; वह नई अर्थ-भूमियों पर पुनर्जन्म लेता है, कभी प्रतिरोध और आत्मसंघर्ष की भाषा बनकर, कभी सभ्यता-विवेक और मूल्य-संश्लेष की भाषा बनकर [7]। इसी से हिंदी की लम्बी कविता मिथक को 'परंपरा' से 'समकालीनता' तक पहुँचाने की सबसे सशक्त विधा सिद्ध होती है [2]।

संदर्भ सूची

1. हटचियन, लिंडा; ओ'फ्लिन, सिओभान. (2013). *अनुकूलन का सिद्धान्त* (द्वितीय संस्करण). न्यूयॉर्क, यू.एस.ए.: रूटलेज, पृष्ठ 14.
2. सान्याल, गौतम. "आख्यानशास्त्र के विविध आयाम" (ई-पाठ्य सामग्री).
3. त्रिपाठी, सूर्यकान्त 'निराला'. (2010). "राम की शक्ति-पूजा," *निराला संचयिता* (सं.). रमेशचन्द्र शाह. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, पृ. 97.
4. प्रसाद, जयशंकर. *कामायनी* (मानक/संपादित पाठ), पृ. 1–3, 7-10.
5. वाजपेयी, नन्ददुलारे. *छायावाद* (साहित्य-आलोचना)
6. शर्मा, रामविलास. *छायावाद* (साहित्य-आलोचना).
7. बार्थ, रोलाँ. (1972). *मिथोलॉजीज़* (अनु.: एन. लैवर्स). न्यूयॉर्क, यू.एस.ए.: हिल ऐण्ड वैंग, पृष्ठ 2, 109.
8. रामानुजन, ए. के. (1991). "थ्री हंड्रेड रामायणाज़: अनुवाद पर पाँच उदाहरण और तीन विचार," *मनी रामायणाज़: दक्षिण एशिया में आख्यान-परम्परा की विविधता* (सं.). पाउला रिचमैन. बर्कले, यू.एस.ए.: यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफ़ोर्निया प्रेस, पृ. 22–48.
9. "शतपथ ब्राह्मण में मनु–मत्स्य आख्यान" (इकाई/पीडीएफ). ई-ज्ञानकोश
10. रोशर, लुडो. (1986). *द पुराणाज़*, खंड 2, फास्क. 3). वीज़बाडेन, जर्मनी: ओटो हरासोविट्स, पृ. 7–10.
11. डोटी, विलियम जी. (2000). *मिथोग्राफी: मिथकों और अनुष्ठानों का अध्ययन.* टस्कालूसा, यू.एस.ए.: यूनिवर्सिटी ऑफ अलबामा प्रेस.
12. *देवीमाहात्म्य* (मार्कण्डेयपुराण अंतर्गत दुर्गासप्तशती). (मानक पाठ/अनुवाद).

13. *वाल्मीकि रामायण* (आदित्यहृदय-प्रसंग सहित).
14. "जयशंकर प्रसाद की कामायनी में शैव-दर्शन" (शोध-लेख).